पेज - (1)
B.A - III
19.05.20

किरण कुमारी (हिन्दी - विभाग)
वैशाली महिला महाविद्यालय
हाजीपुर।

उन्होंने सुमन का उद्धार किया और उसके लिए उन्होंने मान, मर्यादा और प्रतिष्ठा सभी को बाजी लगा दी। उन्हीं के उत्साह दिलाने से पद्मसिंह सुधार क्षेत्र में आते हैं और सुमन के उद्धार के लिए स्वयं विट्ठलदास घर घर जाकर चन्दा इकट्ठा करते हैं।

विट्ठलदास का जीवन सार्वजनिक है और उसी के अनुरूप उनमें साहस है। सर्वसाधारण में सुधारों को अपनाने की हिम्मत नहीं होती। विधवाश्रम में रखूँ या सुमन को लाकर रखना खतरे से खाली न था। उससे विट्ठलदास की बदनामी और आश्रम के टूट जाने का भय था पर विट्ठलदास ने निर्भय होकर

पेज - (2)

इन खतरों को मोल लिया। उन्होंने अबुल वफा, सेठ चिम्मनलाल आदि की स्वार्थपरता को पहचाना और उनकी दिखाऊ सहानुभूति पर ठोकर मार दी।

इस प्रकार अपने तर्कों के बल पर उन्होंने सुमन को दालमंडी छोड़ने के लिए तैयार किया। यह उनकी बहुत बड़ी सफलता थी। उपन्यासकार ने लिखा है —

दालमंडी से निकल कर विट्ठलदास को ऐसा जान पड़ता, मानो वह किसी निर्जन स्थान पर आ गये। रास्ता अभी बंद न हुआ था। विट्ठलदास को ज्यों ही कोई परिचित मनुष्य मिल जाता, वह उसे तुरंत अपनी सफलता की सूचना देते। आप समझते हैं कि कहाँ से आ रहा हूँ। सुमनबाई की सेवा में गया था। ऐसा

पेज - (3)

मंत्र पूछा कि सिर न उठा सकी, विधवा-आश्रम में जाने को तैयार है। काम करने वाले यों काम करते हैं। इस कथन में आत्म-श्लाघा तथा बच्चों का ऐसा सरल स्वभाव स्पष्ट रूप से झलकता है। वह पल में रुष्ट और पल में नाराज होने वाले व्यक्ति हैं।

विट्ठलदास जी निर्भीक तथा स्पष्टवादी हैं। अपना कर्तव्य निर्धारित करने के बाद उस पर दृढ़ता से जुट जाते हैं और उन पर किसी की धमकियों का प्रभाव नहीं पड़ता। इसी कारण प्रायः लोग उनसे कतराते हैं क्योंकि वह समय आने पर चूकने वाले व्यक्ति न थे। स्पष्टवादी होने के कारण अपने मन में आयी बात को

Scanned with CamScanner

पेज - 5

शोक पाना विट्ठलदास के लिए कठिन है।

विट्ठलदास न्यायप्रिय सरल मनुष्य थे। जिधर न्याय खींच ले जाता, उधर चले जाते थे। इसमें उन्हें लेशमात्र संकोच न था। विट्ठलदास गांधीवादी विचारक की भाँति केवल अपने कर्तव्य के प्रति समर्पित थे। उन्हें उसके फल की आकांक्षा नहीं है। विट्ठलदास के सम्पूर्ण जीवन चरित्र का विश्लेषण करने के बाद हम कह सकते हैं कि वह एक निस्वार्थी और निस्पृही समाज-सेवक हैं। सेवाव्रत के लिए तन-मन-धन से अर्पित इस समाज सेवक में उच्च कोटि की मानवता के दर्शन होते हैं।

× ×